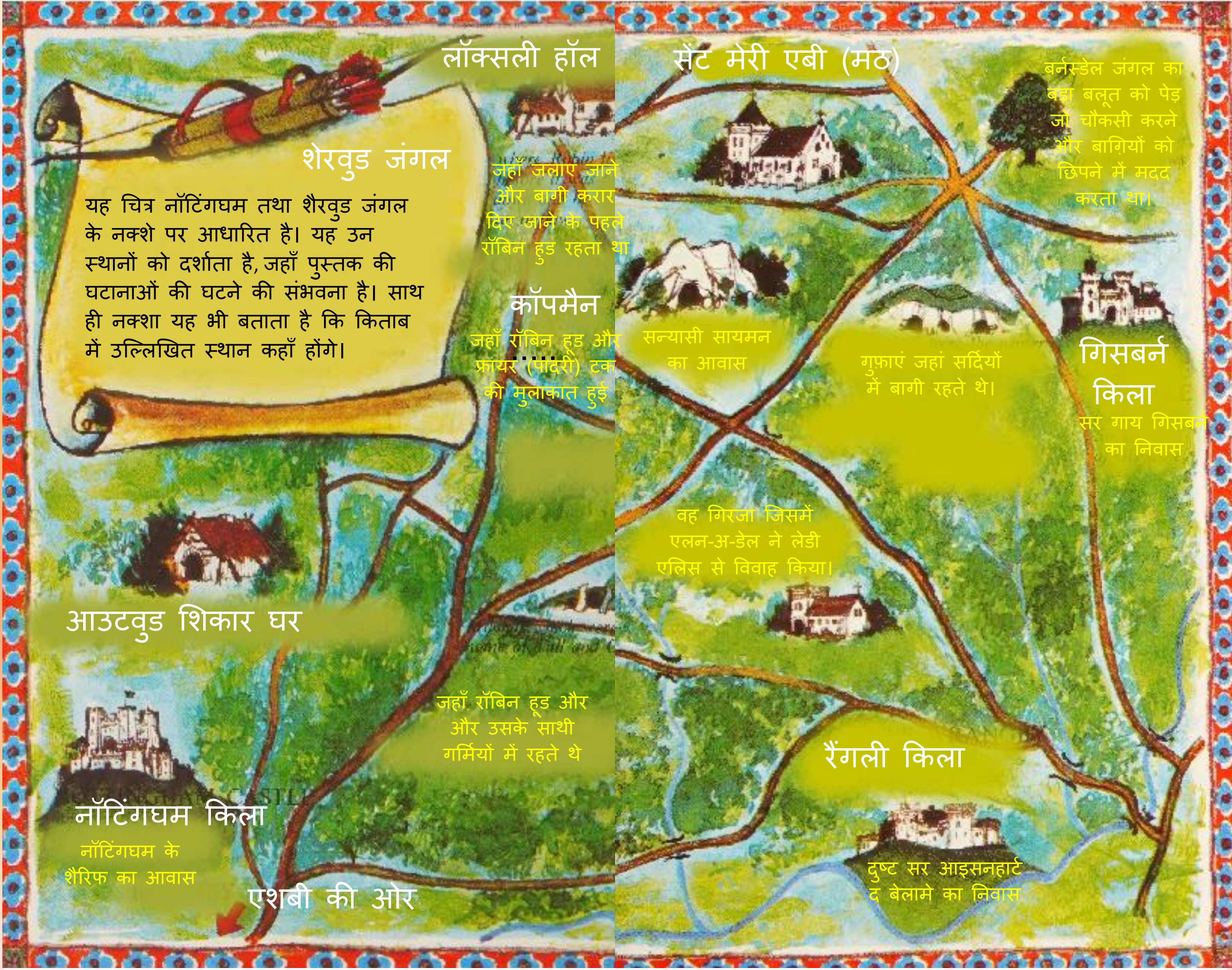
बचाव के लिए आया रॉबिन हुड

लेखनः डैसमंड डंकरली

चित्रः बरनार्ड ब्रैट

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा




लॉक्सली हॉल
शेरवुड जंगल
यह चित्र नॉटिंगघम तथा शैरवुड जंगल के नक्शे पर आधारित है। यह उन स्थानों को दर्शाता है, जहाँ पुस्तक की घटानाओं की घटने की संभवना है। साथ ही नक्शा यह भी बताता है कि किताब में उल्लिखित स्थान कहाँ होंगे।
जहाँ जलाए जाने और बागी करार दिए जाने के पहले रॉबिन हुड रहता था
कॉपमैन
जहाँ रॉबिन हूड और फ्रायर (पादरी) टक की मुलाकात हुई
आउटवुड शिकार घर
जहाँ रॉबिन हूड और और उसके साथी गर्मियों में रहते थे
नॉटिंगघम किला
नॉटिंगघम के शैरिफ का आवास
एशबी की ओर
सेंट मेरी एबी (मठ)
बर्नस्डेल जंगल का बड़ा बलूत को पेड़ जो चौकसी करने और बाग़ियों को छिपने में मदद करता था।
सन्यासी सायमन का आवास
गुफ़ाएं जहां सर्दियों में बागी रहते थे।
गिसबर्न किला
सर गाय गिसबर्न का निवास
वह गिरजा जिसमें एलन-अ-डेल ने लेडी एलिस से विवाह किया।
रैंगली किला
दुष्ट सर आइसनहार्ट द बेलामे का निवास

1066 में अंतिम सैक्सन शासक हैरल्ड की युद्ध में मृत्यु हो गई। नॉर्मंडी का विजेता, ड्यूक विलियम इंग्लैंड का शासक बना। जिन सामन्तों और जागीरदारों ने उसका समर्थन किया था उन्हें समृद्ध सैक्सन किले, हवेलियाँ और जागीरें दे दी गईं। चर्च ने भी विलियम का समर्थन किया था, सो ईसाई मठ भी अधिक धनवान और ताकतवर बने।

कई सालों तक इंग्लैंड में कठोर शासन रहा, केवल विलियम का ही नहीं, बल्की उसके बाद आए अन्य नॉर्मन शासकों का भी। आज़ाद सैक्सन नागरिकों और 'विलियनों' (किसानों) को नॉर्मन राजाओं के नए कानूनों और करों से नफ़रत थी। वे अपने नॉर्मन स्वामियों के प्रति कड़वाहट से भरे थे।

उन दिनों क़िताबें कम थीं। अधिकतर लोग पढ़ भी नहीं सकते थे। सो वे घुमन्तू चारणों द्वारा गाई गई कथाएं सुना करते थे।

इनमें से कई कहानियों का नायक रॉबिन हुड हुआ करता था। इनमें से कुछ लोक-गाथाओं को पुरानी पाण्डुलिपियों में पढ़ा जा सकता है। हालांकि उन कहानियों में क्रमशः कई लेखकों द्वारा न केवल बदलाव किए गए, बल्की बहुत कुछ जोड़ा भी गया।

बचाव के लिए आया रॉबिन हुड

लेखनः डैसमंड डंकरली

चित्रः बरनार्ड ब्रैट

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



बचाया जाना

अल्ल-सुबह का सूरज शैरवुड जंगल के बड़े बलूत और चीड़ के पेड़ों के बीच नज़र आने लगा था। पतझड़ के आने के साथ उनके पत्ते हरे से सुनहरे और भूरे होने लगे थे। हवा में अक्तूबर के एक खासे गर्म दिन का वादा था। जंगल के किनारे लट्ठों से बनी एक झोंपड़ी थी। उसमें खाना पकाने की आग जलाई जा चुकी थी और उसका धुंआ पेड़ों बीच से ऊपर उठ रहा था। जंगल की शान्ति केवल कीड़ों की गुनगुनाहट और जंगली कबूतरों की गुटुर-गूं से भंग हो रही थी।

अचानक खड़खड़ की आवाज़ आई और कबूतरों के पंखों की फड़फड़ाहट सुनाई दी। झोंपड़ी में रहने वाले लकड़हारे की बीवी अपना झाड़ू हिलाते हुए झोंपड़ी से बाहर दौड़ी। उसने सोचा कि उसकी मुर्गियों के पीछे कोई लोमड़ी है। पर उसने जो देखा उससे वह वापस अन्दर भागी और धड़ से दरवाज़ा बन्द कर लिया।

उसकी वृद्ध माँ ने उस हाँडी से ऊपर नज़र उठा कर देखा, जिसमें वह कड़छी चला रही थी। "क्या लोमड़ी ही थी?" उसने जानना चाहा। वे दानों घर में अकेली थीं, क्योंकि लकड़हारा सुबह ही जंगल जा चुका था।

"मैंने पूछा क्या है?" बुढ़िया ने सवाल दोहराया। उसकी आवाज़ बेटी के चेहरे का भाव देख चिन्ता से भर और ऊँची हो गई थी। "लोमड़ी तो तुम्हें इस तरह डरा नहीं सकती। वह खिड़की का परदा उठा बाहर झाँकने बढ़ी, पर उसकी बेटी ने उसका हाथ ज़ोर से पकड़ लिया।

"दूर ही रहो माँ," उसने बल देकर कहा। "हम कुछ कर नहीं सकते!"

"पर लोमीड़ी आग की लपटों से डरती है," बुढ़िया ने हाथ छुड़ा चूल्हे से एक जलती लकड़ी उठाई।

"लोमड़ी नहीं है माँ," बेटी ने बेसब्री से कहा। "वे तो ...." वह अचानक रुकी और अपनी उंगली होठों पर धरी ही थी कि बाहर से मुक्कों और लातों की आवाज़ें आईं। तब उन्होंने एक सहमी आवाज़ कहते सुना, "मालिक मैंने किया क्या है जो आपने मुझे इस तरह धर-पकड़ा है?"

"किया क्या है, धूर्त सैक्सन?" एक सख़्त नॉर्मन आवाज़ ने गुर्रा कर कहा। "क्या तुम जानते नहीं कि तुमने जिस खेत में अपनी बत्तखों को चुगने छोड़ दिया था वह मालिक का है? बेअदब सैक्सन किसानों की साझा चरागाह नहीं?"







"तुमने सोचा होगा कि वह ज़मीन मालिक के किले से आधे दिन की सवारी पर है, सो तुम धरे ही नहीं जाओगे!" दूसरी आवाज़ ने झिड़क कर कहा। "पर हमारे मालिक गिसबर्न के गश्ती दस्ते यहाँ तक फुर्ती से आते हैं। क्योंकि मालिक जानते हैं कि तुम सैक्सन चोर कुत्ते हो!"

"पर इससे नुक्सान क्या हुआ?" डरी हुई आवाज़ फिर से चीखी। "खेतों से फसल काटी और इकट्ठा की जा चुकी है, वे खाली हैं। मेरी बत्तखें तो सिर्फ ठूंठों में चोंच मार चुग रही थीं ताकि क्रिसमस के पहले मोटी हो जाएं।"

मार-पिटाई और दर्द भरी चीखों की आवाज़ें जारी रहीं। "इससे पहले की चोरी के जुर्म में तुम्हारा हाथ काट दिया जाए," नॉर्मन बोला, "किले के आँगन में बीस कोड़े तुम्हारी गुस्ताख ज़बान को चुप कर देंगे।" पिटाई का लाख विरोध करने के बावजूद उस व्यक्ति को बन्दी बना वहाँ से ले जाया गया।

जब आवाज़ें हल्की पड़ गईं, लकड़हारे की बीवी ने तब जाकर दरवाज़ा खोल बाहर झाँकने की हिम्मत की।

दो सिपाही नीली वर्दी में थे, उनकी ढ़ाल पर सूअर के सिर का प्रतीक था। "लॉर्ड गिसबर्न के दो सिपाही हैं माँ," वह फुसफुसाई। "वे बुज़ुर्ग गुडमैन प्राइस को अपने साथ ले जा रहे हैं। हमें क्या करना चाहिए?"

उसने निराशा से भर बत्तखों के दुबले-पतले रखवाले को उस जगह घसीट ले जाते देखा जहाँ सिपाहियों के घोड़े बंधे थे। बूढ़े खेतिहर के गले पर रस्सी का एक छोर बांध सिपाही ने दूसरा छोर काठी की घुंडी से बांधा। बूढ़े की शिकायतें तब अचानक थम गईं जब घोड़े आगे बढ़े और गले पर बंधी रस्सी कस गई।

"गिसबर्न!" बूढ़ी स्त्री ने ज़ोर से कहा। "उस नॉर्मन राक्षस पर शाप बरसे! ऐसी नाइन्साफ़ी कभी न होती अगर लॉक्सली का रॉबर्ट हमारा मालिक होता। लॉक्सली की ज़मीनें सैक्सनों की मिल्कियत थीं, वे ही तो उसकी पहले देखरेख करते थे।"

"यही तो, माँ!" लड़की ने उत्तेजना से भर कहा। "हम ठीक यही कर सकते हैं।"

"क्या लड़की, क्या?" उसकी माँ ने जानना चाहा।

"रॉबिन हुड!" लड़की ने उत्साह से कहा। "वह हाथ बांधे देखता नहीं रहेगा, जब उसके पुराने सेवक को कोड़े जमा लंगड़ा-लूला बना दिया जाए।

"ना, ऐसा तो वह कतई नहीं करेगा। पर हमें वह मिलेगा कैसे?" माँ ने पूछा। "केवल पाखी और हिरण ही यह जानते हैं कि रॉबिन हुड कहाँ मिलेगा - या फिर जंगल में रहने वाले राक्षस बौने।"

"चुप करो माँ," लड़की ने बेसब्री से कहा। "यह तुम्हारी प्रेत-कथाओं का समय नहीं है।"

दोनों ही औरतें तब सचमें डर गईं जब उन्होंने एक छोटी भूरी आकृति को पेड़ों के बीच एक परछाईं-सा सरकते देखा।



"अगर कोई यह जानता है तो, वह सन्यासी सायमन ही होगा कि रॉबिन हुड तक ख़बर कैसे पहुँचाई जाए," लकड़हारे की बीवी ने कहा। "पर सबसे पहले तो श्रीमति प्राइस को ख़बर देनी होगी।" बूढ़ी माँ पैर घसीटती हुई मेज़ पर रखे अपने दुशाले को उठाने बढ़ी।

"ना माँ, तुम यहीं रहो। मैं अकेले ज़्यादा तेज़ चल सकूंगी," युवती ने कहा। उसने अपना स्कर्ट उठाया और घास पार करती हुई पेड़ों के बीच भागी। वह एक पगडंडी पर तेज़ी से बढ़ते हुए उस खाली जगह पहुँची जहाँ फूस की छाजन वाली झोंपड़ी थी। बड़े बलूत के पेड़ के नीचे कुछ मरियल से सूअर फल तलाशते घूम रहे थे। एक ठिगनी बुज़ुर्ग स्त्री पतली धारा के पास झुकी कपड़े धो रही थी। दौड़ते पैरों की आहट सुन उसने अपना सिर उठाया।

"बड़ी जल्दी में हो पडौसन!" वह बोली। "कुछ गड़बड़ है क्या?"

लकड़हारे की बीवी की साँसें फूल चुकी थीं, पर उसने देर नहीं की। "बैटसी प्राइस," वह हाँफते हुए बोली, "सिपाही - सर गाय के सिपाही - तुम्हारे पति को ले गए हैं - कोड़े लगाने और मुझे तो लगता है वे और भी बदसलूकी करेंगे!"

बैटसी प्राइस चीख पड़ी। "अरे नहीं," वह बिलखी। "मेरे बेचारे पति को, नहीं! मैं क्या करुं?" उसने अपना चेहरा एप्रन से ढ़का और सुबकने लगी।

लकड़हारे की पत्नी घुटनों के बल बैठी और अपनी बाँह उसके गले में डाली। "हमें किसी तरह यह ख़बर रॉबिन हुड तक पहुँचानी होगी!" उसने कहा।

“मालिक रॉबर्टस्!” बैटसी ने कहा। “बेशक वे मदद करेंगे। मैं उन्हें बहुत पहले से जानती हूँ। जब लॉक्सली हॉल को जलाया गया, मेरा पति ज़रूर उनके साथ ग्रीनवुड जाता, पर उसकी उम्र हो चुकी थी!” पर तब अचानक उसके चेहरे से उम्मीद पुंछ गई, और उसकी जगह दुख ने ले ली।

“पर हम उन्हें तलाशेंगे कहाँ?” उसने उदास हो कहा। “वह तो जंगल में कहीं भी हो सकता है। किसीको उसके छिपने की जगह का पता ही नहीं है।”

“हमें कोशिश तो करनी होगी,” युवती ने दृढ़ता से कहते हुए बैटसी को पैरों पर खड़ा किया। “अगर कोई मदद कर सकता है तो सन्यासी सायमन, चलो उठो हमें जल्दी करनी होगी।”

जंगल में काफ़ी अन्दर चूना पत्थर का एक उभार था। झाड़-झंखड़ एक बड़ी गुफ़ा के प्रवेश को छिपा रहे थे। इसी गुफ़ा में सन्यासी सायमन रहता था। जिस समय रॉबिन हुड लॉक्सली का रॉबर्ट था, वह एक आज़ाद सैक्सन नागरिक था और शैरवुड के इस इलाके का मालिक भी था। और सायमन लॉक्सली हॉल का पादरी था।

जब लॉक्सली हॉल को जला दिया गया, उसके मालिक को बाग़ी की तरह भागने पर मजबूर किया गया। विल स्कार्लेट जैसे कई नौजवान किसान और चक्की के मालिक का बेटा मच, उसके साथ गए। सायमन उस समय उनका साथ देने के लिए उम्र दराज हो चुका था। सो उसने इस गुफ़ा में पनाह ली। यह गुफ़ा बचपन में रॉबर्ट की छिपने की पसन्दीदा जगह थी।



गुडमन प्राइस जैसे और भी लोग थे जो बाग़ियों की खतरे भरी ज़िन्दगी जीने के लिए बूढ़े हो चुके थे। सो गिसबर्न के सर गाय ने उन्हें उनकी छोटी झोंपड़ियों में रहने की छूट दे दी थी। सर गाय को लॉक्सली की समूची ज़मीनें दे दी गई थीं, पर नॉर्मन लोगों को सैक्सन किसानों की परवाह नहीं थी। इन किसानों के साथ सख़्त व्यवहार और क्रूरता बरती जाने लगी। जो कुछ भी उनका था उनसे छीन लिया गया और बहुत ही कम छोड़ा गया। सायमन ने किसानों की भरसक मदद की, पर वह रॉबिन हुड या उसके किसी साथियों के बिना खास कुछ कर ही नहीं सकता था, जो ताज़ा माँस, आटा और कपड़े लाकर देते थे। रॉबिन और बाग़ियों का उसका गिरोह समूचे शैरवुड इलाके में घूमा करते थे और नॉर्मन आतंक और अन्याय के विरुद्ध इस जंग में वे बाग़ियों के सरदार रॉबिन हुड के पुराने घर से कभी बहुत दूर नहीं जाते थे।

इस समय सायमन अपनी गुफ़ा के बाहर दो लोगों से बातचीत कर रहा था। ये लोग चमकीले हरे कपड़े पहने थे। क्योंकि पेड़ों के पत्ते हरे से सुनहरे तो होने लगे थे, पर पूरी तरह पतझड़ के लाल या भूरे नहीं हुए थे।



उनमें जो ज़्यादा लम्बा-चैड़ा था, उसने अपने कंधे से एक जंगली सूअर को उतार कर नीचे रखा। उसके साथी ने सायमन से बात की।

"तुम कह रहे हो कि आज सुबह की गड़बड़ी के बारे में तुमने कुछ नहीं सुना है, मेरे दोस्त?"

"कुछ भी नहीं रॉबिन," सन्यासी ने कहा। "अजीब बात है कि मुझे कुछ पता लगता उसके पहले ही ख़बर तुम तक पहुँच गई।"

"जब ख़तरे का अंदेशा हो टुल बहुत तेज़ी से चलता है। उसने हमें यहाँ आते वक़्त रास्ते में ही पकड़ लिया," रॉबिन ने बताया।

सायमन ने हाँ में सिर हिलाया। टुल और उसका भाई कॉ जंगल में रहने वाले बौने थे। उनका कद किसी लड़के से ज़्यादा नहीं था। वे घने जंगल में किसी टीले के पीछे रहते थे। अंधविश्वासी किसान उनसे डरते थे और उन्हें गॉबलिन या ब्राउनी कहा करते थे। टुल और कॉ रॉबिन के प्रति वफ़ादार थे, क्योंकि बहुत पहले उसने उन दोनों की जान बचाई थी। सो अब वे बाग़ियों को रास्ता दिखाने, चौकसी करने और खोज-ख़बर लेने का काम करते थे।

रॉबिन हुड रात या दिन जहाँ कहीं होता उनमें से एक उससे बहुत दूर नहीं होता।

अचानक घंटे की टंकार पेड़ों के बीच से गूंज़ती आई। तीनों ने अपना सिर उठाया ।

"शायद अब हमें पता चल सकेगा कि मामला क्या है," सायमन ने कहा। छोटे जॉन ने जंगली सूअर को फिर से अपने कंधे पर रखा और रॉबिन के पीछे गुफ़ा में घुस गया। सायमन बाहर ही खड़ा रहा। जब लॉक्सली का गिरजा घर जला दिया गया था सायमन उसके अवशेषों में से घंटा निकाल लाया था। अब वह घंटा गुफ़ा से कुछ दूरी पर बलूत के पेड़ की एक शाखा पर लटका था। गाँव वाले जब भी उससे बात करना चाहते थे, अक्सर पाते कि वह जड़ी-बूटियाँ इकट्ठा करने या किसी बीमार से मिलने गया हुआ है। साथ ही घंटे की आवाज़ सुन उससे मिलने आए लोगों को गुफ़ा में छिपने का मौका भी मिल जाता था, खास कर तब जब वे दूसरों के सामन आना न चाहते हों।

बैटसी प्राइस और लकड़हारे की पत्नी ने सायमन को अपना दुखड़ा सुनाया। वे इस बात से अनजान रहीं कि वे जिस इन्सान की मदद चाह रही थीं, वह कुछ फीट की दूरी पर सब कुछ सुन रहा है।

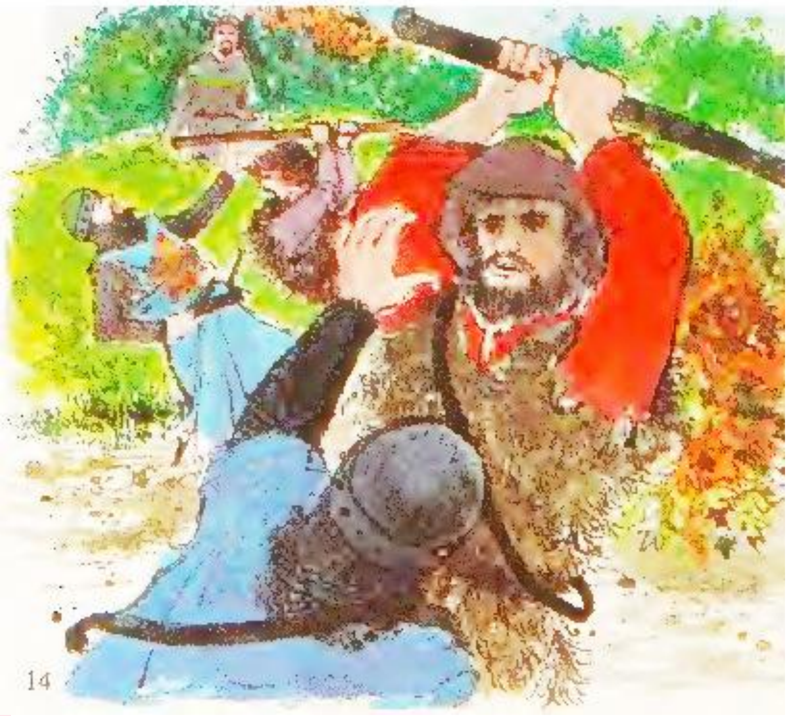
इस बीच कुछ मील दूर एक छोटा जुलूस जंगल की मुख्य पगडंडी पर बढ़ रहा था। दोनों नॉर्मन सिपाही

अपने घोड़ों पर सवार धीमे-धीमे बढ़ रहे थे, क्योंकि सूरज अब पूरे ताप पर था। बूढ़े बत्तखों के रखवाले के लिए यह सफ़र क्रूर था। वह सिपाहियों के पीछे लड़खड़ाता चल रहा था। उसे गले के गिर्द बंधी रस्सी को पकड़ना पड़ रहा था जो उसकी साँसे बन्द कर रही थी।

गुडमन प्राइस तब शुकराने से भर धरती पर घुटनों के बल जा टिका, जब भूरे लबादे और भेड़ की खाल का कोट पहने दो लोगों ने नॉर्मन सिपाहियों को रोका। उन्होंने जानना चाहा कि क्या सिपाहियों ने कुछ भटकी हुई भेड़ों को दखा था। इन गड़ेरियों को रूखा जवाब मिला। गड़ेरियों में से एक ने गुडमन की ओर इशारा कर सवाल पूछा।

''इसने क्या किया है, मालिक?''

''तुम्हें इससे क्या मतलब,'' एक सिपाही ने गुर्रा कर जवाब दिया, ''पहले कोड़े खाने के बाद यह अपना हाथ खो देगा। और यही तुम्हारे साथ भी होगा, अगर तुम फौरन रास्ते से नहीं हटते, सैक्सन मूरख!''



''मैंने तो कभी कोड़े खाए नहीं मालिक,'' लम्बे गडेरिए ने कहा। ''क्या आपने खाए हैं?''

''बदतमीज़!'' नॉर्मन सिपाही गरजा। ''मैं अपनी तलवार के सपाट हिस्से से एक देता हूँ!'' वह अपने घोड़े से उतरा ओर म्यान से तलवार खींचने लगा। अपनी कलाई पर लम्बे गडेरिए की कोहनी के वार से उसकी तलवार छिटक कर दूर जा गिरी। गुस्से से दहाड़ता सिपाही तलवार उठाने झुका ही था कि उसकी पीठ पर पड़े ज़बरदस्त मुक्के ने उसे धराशायी कर दिया। दूसरा सिपाही अचम्भे से उबर साथी की मदद करता उसके पहले ही दूसरे गड़ेरिए ने उसे उसकी काठी से नीचे घसीटा और उसके साथ भी वही सुलूक हुआ। गुडमैन प्राइस जो किनारे बैठा यह सब देख रहा था, उसे अपनी आँखों पर भरोसा ही नहीं हुआ। सिपाहियों ने पलट कर लड़ने की कोशिश की, पर जल्द ही उनकी गुस्से से भरी दहाड़ें रहम की दुहाइयों में बदल गईं। दोनों गड़ेरियों ने सिपाहियों को सज़ा देना बन्द किया, पर उनमें जो लहीम-शहीम था, वह एक आख़िरी धौल जमाने से खुद को रोक न सका।

''अब उठो, और दफ़ा हो जाओ!'' दूसरे गड़ेरिए ने सख़्ती से कहा। ''और अगली बार किसी बुज़ुर्ग को कोड़ों से पीटने के लिए घसीटने के पहले याद रखना कि खुद पिटना कैसा लगता है।''

दोनों सैनिक लड़खड़ाते अपने घोड़ों की ओर बढ़े। ''ना!'' गड़ेरिए ने कहा। ''घोड़े छोड़ दो अपने पाप के अड्डे तक पैदल ही जाओ। खुद को किस्मत वाला समझो कि हम तुम्हें उस तरह घसीट कर नहीं ले जा रहे, जैसे तुमने बूढ़े को घसीटा था। चलो भागो यहाँ से!''

दोनों सिपाही कराहते, लंगड़ाते पगडंडी पर बढ़ने लगे। "एक आख़िरी बात भी सुन लो नॉर्मन धौंसबाज़ों।

आगे से इस तरफ गश्त लगाते नज़र न आना। ना ही इस बूढ़े बाबा को तलाशने आना। तुम्हारे चेहरे पहचान लिए गए हैं। अगर यहाँ दिखे तो ज़िन्दा नहीं बचोगे," गड़ेरिए ने पीछे से पुकार कर कहा।

रॉबिन हुड ने सिपाहियों पर तब तक नज़र गड़ाए रखी जब तक वे ओझल न हो गए। तब उसने और छोटे जॉन ने झाड़ियों में छिपाए अपने तीर-कमान और तलवारें निकालीं। उन्होंने गुडमैन प्राइस को एक घोड़े पर बैठाया और रॉबिन दूसरे पर चढ़ा। छोटा जॉन लम्बे डग भरता पैदल ही उनके साथ चल पड़ा। वे बूढ़े को सुरक्षित घर पहुँचाने निकल पड़े। बत्तखों के रखवाले ने दोनों बागियों का शुक्रिया अदा करने की कोशिश की। वह उन्हें पहचान चुका था। पर उसके लिए बोल पाना मुश्किल था। रस्सी ने उसका गला छील जो दिया था।

"शुक्रिया की दरकार नहीं है, दोस्त," रॉबिन ने उससे कहा। "जब समय अच्छा था, तुमने वफ़ादारी निभाई थी।"

जब तक वे उसकी झोंपड़ी तक पहुँचे शाम होने ही वाली थी। उन्होंने बूढ़े को खुशी से घर की ओर दौड़ते देखा।

छोटा जॉन उस घोड़े पर सवार हो गया जिस पर अब तक बुज़ुर्गवार बैठा था।

"अब कहाँ रॉबिन?" उसने पूछा। "और इन घोड़ों का क्या? वे हमारे काम तो आएंगे नहीं। पर उन्हें छोड़ दें तो वे सीधे गिसबर्न के अस्तबल पहुँच जाएंगे।"

"हाँ, जॉन," रॉबिन ने जवाब दिया। "हमें उनकी ज़रूरत नहीं। हम इन पेड़ों के बीच पैदल ही ज़्यादा तेज़ी से और बिना आवाज़ किए बढ़ सकते हैं। हम इन्हें अपने दोस्त सर रिचर्ड ली के पास भेज देते हैं। बेशक वे इनका बेहतर इस्तमाल कर सकेंगे। पर उसके पहले एक आख़िरी बार इन्हें सरपट दौड़ाते हैं। मैं सर गाय को एक संदेशा भेजना चाहता हूँ!"

इधर दोनों सिपाहियों को गिसबर्न किले तक पहुँचने में पूरी दोपहर लग गई। उनके शरीर दुख रहे थे, और घावों से भरे थे। सो वे धीरे-धीरे चल रहे थे। बदकिस्मती से सर गाय ने उन्हें चुपके से किले में घुसते देख लिया और पास बुलाया।

उनकी कहानी सुन वह गुस्से से चीख पड़ा। "खुदा की कसम! मुझे विश्वास ही नहीं होता कि मेरे प्रशिक्षित सिपाही मूरख सैक्सन किसानों के एक जोड़े से पिट गए। इस अपमान की भरपाई कोड़े मारने के खंभे पर होगी। पर पहले दूसरों को साथ लो और . . . ।"



"हुज़ूर," सिपाहियों में से एक ने कहा, "वे साधारण . . ." वह अपनी बात खत्म करता उसके पहले ही आगबबूला हुए नॉर्मन सामन्त ने उसे एक झापड़ मारा।

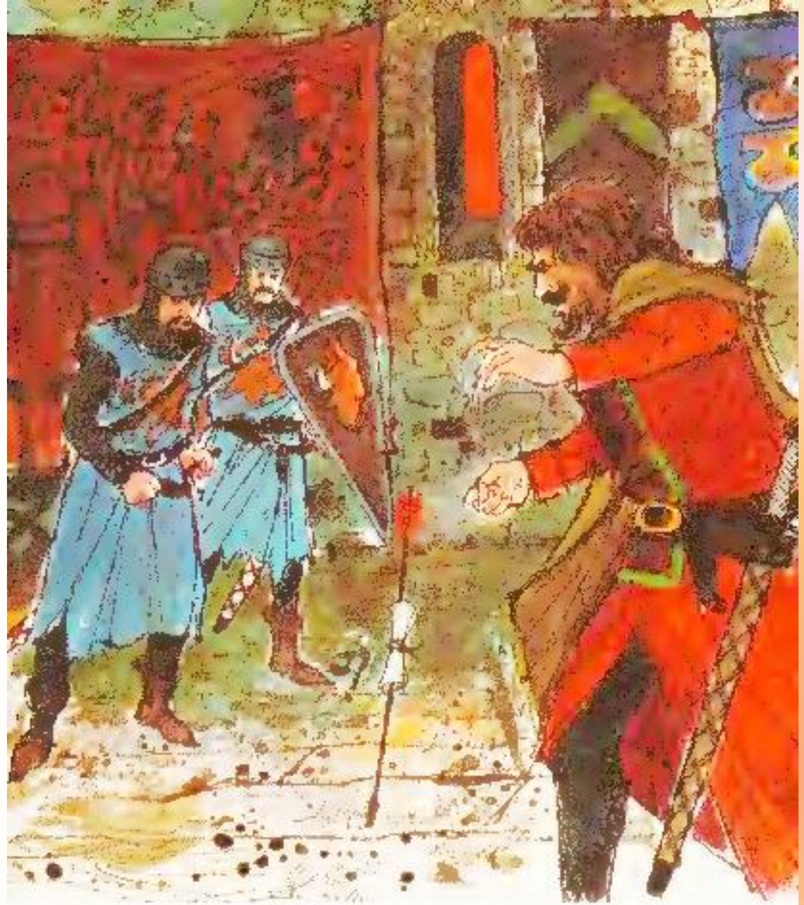
"बहाने न बनाओ बेवकूफ़!" वह गरजा। "मैं जो कहता हूँ करो, वरना जवाबदेही तुम्हारी ही होगी।"

डरा-सहमा सिपाही उठा और अपने नाराज़ मालिक से दूर हट गया। उसके साथी ने एक आख़िरी कोशिश की। "आपका हुकुम हो तो हुज़ूर," वह बुदबुदाया, "वे साधारण किसान नहीं थे . . ."

अचानक गज भर लम्बा तीर किसी ततैये की तरह सनसनसता गिसबर्न के पाँव के पास फर्श पर आ धंसा। दोनों सिपाहियों को बाहर जा तीरंदाज़ तलाशने को कहने के बाद ही सर गाय ने तीर के साथ नत्थी संदेसा पढ़ा।

"रॉबिन हुड!" उसने उसांस छोड़ कहा। "तो वे मूरख सही कह रहे थे। संतों की कसम, इस घमंडी सैक्सन को तबाह करने का समय आ गया है। अब वह हमें बता रहा है कि नॉर्मन सिपाही कहाँ गश्त लगा सकते हैं, कहाँ नहीं!"

उसने गुस्से आगे-पीछे घूमना बन्द किया और एक संकरी खिड़की से बाहर झांक कर देखा। पश्चिमी आकाश में सूरज लाल और चमचमाता अस्त हो चला था। उसके प्रकाश में सर गाय को पेड़ों की कतार दिखीजो किले की बाहरी दीवार के भी परे जंगल की रेखा थी।



उसने फिर से फ़र्श पर गड़े लम्बे तीर को देखा। गिसबर्न का सर गाय कांप उठा। उसे अहसास हो गया कि जिस माहिर तीरंदाज़ ने इस धुंधलके में तीर को निशाने पर पहुँचाया था वह उसका घातक दुश्मन था।



भूत घोड़ा

रॉबिन ने आग में एक और टहनी डाली जिससे चिंगारियाँ ऊपर उठीं।

"हमें जल्द ही अपने सर्दियों के शिविर में चले जाना होगा," उसने कहा। शाम की धुंध भरी ठंड से बचने के लिए उसने अपना चोंगा अपने कंधों के गिर्द खींचा। "दिन छोटे और रातें लम्बी हो चली हैं।"

"हाँ," विल स्कार्लेट ने जवाब में कहा। "लगता है यही करना होगा। पर मुझे यह ख़याल ही पसन्द नहीं आता। उन गुफ़ाओं में बन्द-बन्द सा लगता है।"

"पर कम से कम तुम उनमें बिना सिर छत से टकराए सीधे खड़े तो हो सकते हो," छोटे जॉन ने शिकायत की।

"और तुम उसके अन्दर बिना टकराए घुस तो सकते हो," पादरी टक बड़बड़ाया। सभी बाग़ी आग के गिर्द बैठे अपने लहीम-शहीम साथियों की परेशानी की कल्पना कर हंसने लगे।

मुझे ग्रीनवुड छोड़ना नापसन्द है," रॉबिन ने कहा, "पर पेड़ों से पत्तियाँ गायब हो चुकी हैं। हमारे खुफ़िया रास्ते अब खुफ़िया नहीं रहे, और छिपने की जगहें भी छिपी नहीं रहीं। इसके अलावा नदी किनारों की काई और घास इस कदर नम हैं कि वहाँ सोया नहीं जा सकता।" बाग़ियों का सरदार उठ खड़ा हुआ। "कल शाम सूरज डूबते ही हम चल पड़ेंगे," वह बोला। "इससे तैयारी करने के लिए हमारे पास कल का पूरा दिन होगा। और आज भी तैयारी शुरू करने के लिए हमारे पास दो घंटों की रोशनी बाकी है।"

हर पतझड़ में बाग़ियों का गिरोह शैरवुड जंगल के इस हिस्से को छोड़ देता था। बसन्त और गर्मियों में यहाँ घने पेड़ और झाड़ियाँ होती थीं। नॉटिंगहम के उत्तर में ज़मीन ऊबड़-खाबड़ थी और बीच-बीच में चट्टानें और ग्रैनाइट के पत्थर उभरे थे। दक्षिण के बलूत और चीड़ के पेड़ों की जगह वहाँ देवदार, स्प्रूस और लार्च के पेड़ थे। चट्टानों के नीचे सदाबहार पेड़ों के बीच छिपी कई गुफ़ाएं थीं जिनका बाग़ी पतझड़ और सर्दियों में इस्तमाल करते थे, ताकि वे गर्म और सूखे रह सकें। बसन्त के आते ही वे वापस अपने प्रिय शैरवुड में लौट आते थे।

कूच करने के पहले कई तैयारियाँ करनी थीं। हालांकि गिरोह के सदस्यों का व्यक्तिगत सामान बहुत कम था, साझा सामान काफ़ी था। उनका खाने-पीने का भंडार और साजो-सामान खोखले पेड़ों के तनों या खोखले किए गए लट्ठों में सावधानी से छिपा कर रखा हुआ था। उन लट्ठों के सिरों पर जंगली लताओं का परदा था। इसमें से कुछ सामान अब खोद कर निकाल लिया गया था और उन छेदों को पत्थरों से पाट दिया गया था।



"दोस्त पादरी," रॉबिन ने कहा, "चार लड़कों को चुन लो, जो अपने अतिरिक्त हथियारों को इकट्ठा करने में मदद करें। डॉड, यह सुनिश्चित करो कि हमारे बर्तन-भांडे साथ बांधे जाने पर कूच के समय कोई आवाज़ न करें। मच, देखना ख़ज़ाने की पेटियाँ पूरी तरह महफ़ूज़ हों। एलन तुम कपड़ों और थानों की व्यवस्था संभालो। जो भूरा हाथकता कपड़ा है, जिसकी ज़रूरत हमें गर्मियों के हरे की जगह न हो, उन्हें सीधे बुज़ुर्ग सायमन के पास पहुँचा दो। इन सर्दियों में वह उसके काम आएगा।"

शिविर की खुली जगह हलचल से भर गई। रॉबिन ने स्कार्लेट को आवाज़ दी। "विल जाकर पहरेदारों को बता दो कि क्या हो रहा है। उनसे कहना वे खास तौर से चौकन्ने रहें क्योंकि हम सब व्यस्त हैं।"

विल स्कार्लेट जैसे ही पहरेदारों की ओर दौड़ा रॉबिन छोटे जॉन की ओर मुड़ा।

"मैं आज शाम ली के सर रिचर्ड से मिलने जाऊंगा," उसने कहा। "जब हम पिछली बार उनसे मिले थे मैंने उन्हें सालाना जगह बदलने की बात बताई थी। मैं उन्हें ख़बर दूंगा ताकि बसन्त में हमारे लौटने के पहले अगर ज़रूरत पड़े तो उन्हें मालूम हो कि हम कहाँ हैं। जब उन्हे पता चला कि हमें अपना सामान भी ले जाना है तो उन्होंने कहा था कि वे माल ढ़ोने वाले घोड़े हमें दे सकते हैं।"

"सारे संत इस विवेकवान सामन्त की रक्षा करें!" छोटे जॉन ने कहा। दरअसल कूच करते वक़्त उसका बोझ हमेशा दूसरों से दुगना होता था। "क्या मैं साथ चलूं रॉबिन?"

"नहीं जॉन," रॉबिन ने जवाब दिया। "यहाँ रह कर काम पर नज़र रखो। यह देखना कि सब कुछ बांध कर तैयार रहे। मैं सर रिचर्ड से कहूँगा कि वे अपने एक निगरान और साइसों के साथ कल भोर ही घोड़े भिजवा दें।"



"सावधानी से जाना रॉबिन," छोटे जॉन ने चेताया। "जंगल गिसबर्न के जासूसों से भरा है। वह अब भी अपनी नॉर्मन प्रतिष्ठा के अपमान से भभक रहा है। तब से ही जब हमने बत्तखों के रखवाले को छुड़ाया था और उसके सिपाहियों को कोड़े लगाए थे। शर्त लगे, उसे तुम्हारा भेजा संदेसा भी नापसन्द आया होगा।"

"डरो मत, बेशक ख़याल रखूंगा," रॉबिन ने कहा। उसने अपनी हथेलियाँ जोड़ीं और नर तीतर की चुनौती देने वाली आवाज़ निकाली। जब जवाब में कोई आवाज़ नहीं आई, रॉबिन उलझन में पड़ गया। उसने फिर से आवाज़ दोहराई।

सारी गतिविधियाँ रुक गईं, सब जवाबी आवाज़ सुनने की कोशिश में लग गए।

"कुछ गड़बड़ है जॉन," रॉबिन ने कहा। "लगता है आस-पास न तो टुल है, ना ही कॉ। मुझे सबसे पहले तो यही पता लगाना होगा।" अपनी कमान उठा रॉबिन फिर छोटे जॉन की ओर मुड़ा।

"अगर दोनों छोटे ठीक हैं," उसने कहा, "तो मैं सर रिचर्ड के पास जाऊंगा। अगर कुछ गड़बड़ है, जैसा मुझे शक हो रहा है, तो तुम मेरी तुरही सुनोगे। तब तुम सीधे मेरे पास आना, क्योंकि मुझे तुम्हारी ज़रूरत होगी। दूसरों को भी यह बता दो।

इतना कह बाग़ियों का सरदार तेज़ी से घने जंगल से बाहर निकला। वह छोटी पगडंडियों और रास्तों को दोनों बौनों की तरह ही बख़ूबी जानता था। जब वह आख़िरी संतरी के अभिवादन का जवाब दे आगे बढ़ा, उसने और सावधानी बरती। ताकि नीचे गिरी पत्तियाँ या टहनियाँ कोई आवाज़ न करें। वह लटकती शाखाओं से बच कर बढ़ रहा था। उसकी चाल शान्त पर शिकार करती बिल्ली-सी तेज़ थी।

रॉबिन ने जंगल के बीचोंबीच बने दो टीलों का रुख किया। ये वे टीले थे जिनके नीचे टुल और उसका भाई कॉ रहते थे। जब तक वह उस जगह तक पहुँचा सांझ हो चुकी थी। पेड़ों के किनारे पहुँच उसने खाली जगह के पार दो टीलों के आकार को देखा।

वहाँ कोई हलचल न थी। रॉबिन स्थिर खड़ा रहा। आँखों को अंधेरा का आदी करते हुए वह चुपचाप कुछ देर घूरता रहा। एक उल्लू ने आवाज़ की, पर उसके बाद हवा की सरसराहट के सिवा सब शान्त था। वह तीतर की आवाज़ निकालने ही वाला था कि अचानक जड़ हो गया। वह कुछ आगे झुका और टीलों के पास की जगह को और ध्यान से देखने लगा। एक टीले के ढलान के नीचे एक काली आकृति हिलती दिखी। वह किसी इन्सान की आकृति थी। उसका आकार दोनों भाइयों से लम्बा था। रॉबिन समझ गया कि यह कोई और ही था। वह आकृति अब टीले के ऊपर की ओर रेंगने लगी। मानों कोई साँप रेंग रहा हो।

रॉबिन ने तीर चलाने से खुद को रोका। कहीं यह घुसपैठिया उसके ही गिरोह का कोई व्यक्ति तो नहीं।

वैसे उसने सबको कह रखा था कि कोई उन टीलों तक न जाए। रॉबिन फुर्ती से आगे बढ़ा। उसकी तलवार उसके हाथ में थी।

अचानक उसे एक छोटी आकृति उस रेंगते इन्सान पर कूदती दिखी। वे दोनों गुत्थम-गुत्थ हो ढलान से नीचे फिसलते आने लगे थे। रॉबिन ने दौड़ते हुए चाँदनी में धातु की चमक देखी। वह पास पहुँचा ही था कि नाटे कद के आदमी का हाथ ऊपर उठा और ज़ोर से नीचे आया। चीखने की आवाज़ आई और एक जीवनहीन शरीर टीले से लुढ़कता रॉबिन के पैरों के पास पसर गया। रॉबिन ने चौंक कर देखा कि उसने हरे कपड़े पहने हुए थे।

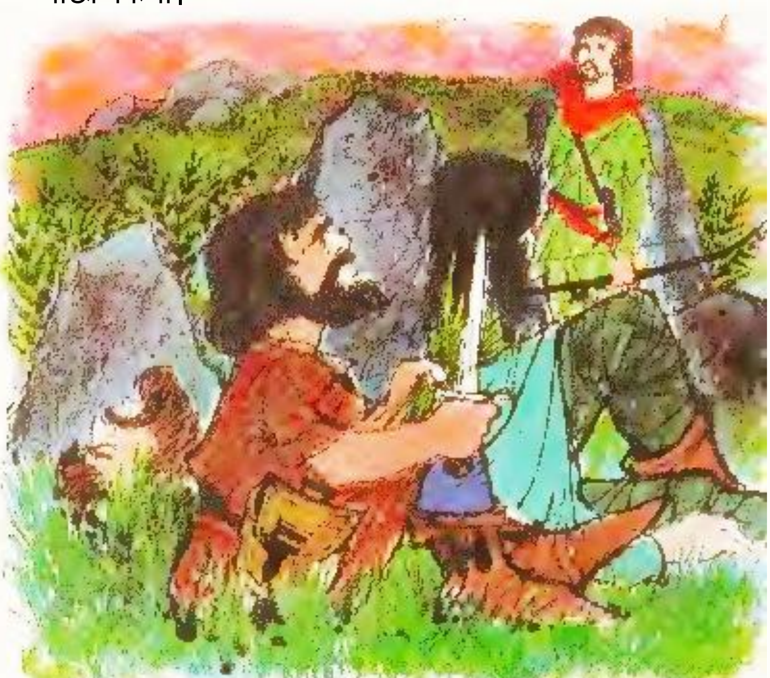


"यह क्या है कॉ?" रॉबिन ने गुस्से से भर बौने से पूछा। "क्या हमारे ही गिरोह के किसी इन्सान ने यह गुस्ताख़ी . . . ?"

"यह आपके गिरोह का नहीं है, मालिक," कॉ ने हाँफते हुए कहा। वह टीले से उतर कर नीचे बैठा और घास पर अपना छुरा साफ़ किया। "यह गिसबर्न का जासूस है। इसने आज सुबह आपके नौजवान हैल को मार डाला और उसकी हरी वर्दी चुरा ली।"

"बेचारा हैल," रॉबिन ने धीमे स्वर में कहा। "पर यह घिनौना इन्सान यहाँ क्यों आया और . . .?"

"मैं आपको चेताने जा रहा था। इसने मेरा यहाँ तक पीछा किया।"



रॉबिन कॉ के पास घुटनों के बल बैठा और उसके चमड़े से बने कोट को हटाया। "यह घाव कैसे हुआ," उसने कॉ से पूछा। "और तुम मुझे क्या चेतावनी देने वाले थे?"

"शैतान जंगल में घुस चुका है," कॉ ने कहा।

"शैतान?" रॉबिन ने पूछा। हालांकि वह समझ चुका था कि कॉ किसका ज़िक्र कर रहा था। "गिसबर्न शैरवुड में है?"

"जी हाँ, मालिक, और उसके साथ इस जैसे कई हैं। यह घाव तब हुआ जब वे टुल को धर ले गए," कॉ ने बताया।

"टुल कैद कर लिया गया," रॉबिन उछल कर खड़े होते ज़ोर से बोला। "उसे कैद कर कहाँ रखा है और वहाँ कितने लोग हैं?"

"शैतान और उसके दस सिपाहियों ने मेरे भाई को आउटवुडस् में कैद कर रखा है,"कॉ ने कहा। "दूसरे नॉर्मनों की तरह वे भी रात को जंगल से डरते हैं," कॉ ने हिकारत से कहा। "सो वे सुबह तक वहीं रहेंगे, तब तक शैतान ने जो मदद मंगवाई है, वह भी आ जाएगी। वे सोचते हैं कि वे महफ़ूज़ हैं। कोई उनके छिपने की जगह जानता नहीं है। यह जो इधर पड़ा है वह मेरी ज़बान को बन्द करने आया था," यह कह कॉ ने जासूस की लाश को एक और लात जमाई।

"फिर तो हमारे पास बरबाद करने को वक़्त नहीं है," रॉबिन ने कहा। वह जिस दिशा से आया था उसी ओर मुड़ उसने तुरही को ज़ोर से एक बार फूंका।

"मैं फिर इसे तब बजाऊंगा जब हम आउटवुडस् पहुँच जाएंगे। क्या तुम सफ़र करने की हालत में हो?"

"शैतान के पास मेरा भाई है," कॉ ने सीधा-सरल जवाब दिया। वे दोनों पेड़ों की ओर चल पड़े।

आउटवुडस् मज़बूत लट्ठों से बना शिकार घर था, जैसे राजा के हिरणों के जंगल में और भी कई थे। उसका इस्तमाल केवल तब होता था जब शाही शिकार टोली जंगल में इतनी दूर आ जाए कि उसी रात वापस लौटना संभव न हो। इसके सिवा केवल कोई निगरानी करने वाला ही उसकी देखरेख करने आता था। ताकि अगर कोई औचक शाही दौरा हो तो शिकार घर तैयार मिले। शाही शिकार घर में रात ठहरने की कीमत किसी आम इन्सान के लिए उसकी जान तक हो सकती थी। पर सर गाय कोई आम इन्सान तो था नहीं। वह ऊँचे कुल का नॉर्मन था और राजा के भाई राजकुमार जॉन का दोस्त भी था। जॉन ही राजा रिचर्ड की गैर-मौजूदगी में राजकाज संभाल रहा था।

इस बीच रॉबिन और उसका साथी तेज़ी से जंगल में बढ़ रहे थे। रॉबिन ने बीच-बीच में रुक कर तुरही बजाई ताकि बाकी बाग़ी सही दिशा समझ लें। जब उन्हें चाँदनी में शिकार घर दिख आया रॉबिन ने एक निशाचर पाखी नाइटजार की कर्कश आवाज़ निकाली। क्योंकि तुरही की आवाज़ नॉर्मनों को उनकी मौजूदगी का अहसास करवा देती।





रॉबिन शिकार घर के पास इन्तज़ार करने लगा। इधर कॉ चुपके से टोह लेने सरक गया। एक, दो कर बाग़ी रॉबिन के पास पहुँचने लगे। रॉबिन ने ग़ौर किया कि जो कुछ ही महीनों पहले तक अनाड़ी किसान थे, अब जंगल में रहने वाले बाग़ियों की तरह एकदम चुप्पे बन चुके थे। कुछ ही देर में बीसेक बाग़ी रॉबिन के इर्द-गिर्द चुपचाप बैठ चुके थे।

“हमें शिविर की सुरक्षा के लिए कई साथियों को छोड़ना पड़ा,” छोटे जॉन ने रॉबिन को फुसफुसा कर बताया। “वहाँ सारा सामान जो था। फिर भी अगर तुम बुलाओगे तो वे आने को तैयार हैं।”

“यहाँ जो करना है उसके लिए हमारे पास काफ़ी और ताकतवर लोग हैं,” रॉबिन ने कहा। “हालांकि हमारी संख्या शिकार घर को पूरी तरह घेरने लायक नहीं।” तब रॉबिन ने सबको बताया कि दरअसल हुआ क्या था।

“तो भेड़िया आख़िरकार अपनी माँद से बाहर निकल, हमारे बीच है,” छोटा जॉन संतोष से गुर्राया।

“हाँ,” रॉबिन ने जवाब दिया। “हालांकि वह हमारी गिरफ्त में अब तक नहीं है। पर हमें पहले टुल को छुड़ाना है, वह भी चुपचाप। अगर उन्हें खतरे का अंदेशा हो गया तो टुल को सबसे पहले मार दिया जाएगा।

अंधेरे में से अचानक एक आकृति निकली। कुछ नए बाग़ी चैंक गए।

“हालात क्या हैं?” रॉबिन ने पूछा।

नॉर्मनों ने खास सावधानी नहीं बरती थी। वे इस भरोसे में थे कि भेस बदल कर निकले उनके जासूस ने टुल के भाई को मार डाला होगा, और किसीको उनका पता-ठिकाना मालूम ही नहीं होगा। और अगली सुबह जिस आदमी को गिसबर्न किले भेजा गया था वह और घुड़सवार सिपाहियों को ले आ पहुँचेगा।

‘टुल को पीछे बने तहखाने में रखा है, किसी सूअर की तरह बांध के” कॉ ने कहा। वह जानता है कि हम आ पहुँचे हैं, वह तैयार रहेगा। जिरह-बख्तर पहने एक सिपाही उस पर नज़र रखे है। दूसरा सिपाही सामने की रखवाली कर रहा है। शैतान और बाकी सिपाही सो रहे हैं।”

रॉबिन ने फुसफुसा कर कुछ आदेश दिए और उसके साथी बिना आवाज़ किए दूर चले गए। शिकार घर के पीछे वाले संतरी ने न कुछ देखा, न सुना। उसे पल भर को छाती में भयंकर दर्द हुआ और वह बेजान हो कॉ के पैरों के पास लुढ़क गया। रॉबिन ने टुल को पहले गले लगाया और उसके बंधन काट दिए। टुल की चमकती काली आँखों ने निःशब्द शुक्रिया अदा की। तब बाग़ियों के सरदार ने तुरही में ज़ोरदार फूंक मारी।



तुरही की आवाज़ के ही साथ सामने वाले संतरी की चीख और अन्दर से हुक्म सुनाई दिए।

“गिसबर्न! अपने कुकर्मों की सज़ा भुगतने का समय आ चुका है!” जब छोटे जॉन ने शिकार घर के सामने इकट्ठा किए गए झाड़-झंखड़ में आग लगाई लाल लपटें लपकने लगीं। “चाहे तुम एक बहादुर सामन्त की तरह, जैसा तुम दावा करते हो तुम हो, बाहर निकलो या फिर मांद में छिपे भेड़िए की तरह, जो तुम दरअसल हो, हमें कोई फ़र्क नहीं पड़ता।”

अन्दर से विरोध की एक चीख आई, तब चुप्पी पसर गई, जिसे लपटों की आवाज़ ही तोड़ रही थी। तब अचानक शिकार घर का भारी दरवाज़ा धड़ाम से खुला।



सामने जल रहा झाड़-झंखाड़ बिखरा और नॉर्मन सिपाही भागते हुए बाहर निकले। वे ज़ोर से चिल्ला रहे थे, उनकी ढालें उठी थीं और हथियार तैयार थे। बाग़ी उनका सामना करने आगे बढ़े। धुंधलके और अफ़रा-तफ़री के चलते तीर चलाना संभव न था। खुली जगह में और पेड़ों के बीच घमासान हुआ। हालांकि वे संख्या में कम थे, नॉर्मन सिपाही प्रशिक्षित थे और वे बहादुरी से लड़े। वे जानते थे कि रहम की कोई उम्मीद न थी। अंततः संख्या काम आई। आखिरी जिरह-बख्तर से लैस सिपाही को भी मार डाला गया। रॉबिन ने लाशों के बीच अपने दुश्मन को तलाशा। गिसबर्न उनमें नहीं था। रॉबिन उसे ढूंढने जलते शिकार घर में घुसने ही वाला था कि दो बाग़ी शिकार घर के पीछे से भागते आए। उनकी आँखें डर से फटी थीं और वे चीख रहे थे।

भूत घोड़ा मालिक, भूत घोड़ा,'' बैट ने हाँफते-काँपते कहा।



''क्या मतलब?'' रॉबिन ने सख्ती से पूछा।

''वह उस दरवाज़े से निकला,'' दूसरे नौजवान बागी ने कहा। ''उसके बाल जल रहे थे और आँखें लाल दहक रही थीं। बेहद डरावना दृश्य था।''

''लगता है दुष्ट सामन्त भाग निकला है,'' रॉबिन ने कहा। बाग़ी गुस्से से चीख पड़े।

''नहीं मालिक, वह भूत घोड़ा ही था,'' बैट ने अपनी बात दोहराई। ''उसका बड़ा-भारी मुँह हमें फाड़ खाने को खुला था।''

''मूरख!'' छोटा जॉन गुर्राया। तुम किसान के किसान ही रहे, अपने अंधविश्वासों के साथ।''



"उस पर इतना न बरसो, जॉन," रॉबिन ने कहा। तब वह शिकार घर की निगरानी करने वाले की ओर मुड़ा, जिसने लड़ाई में कोई शिरकत नहीं की थी और अपने हाथ उठाए बाहर निकला था।

"मुझे बताओ," रॉबिन ने सहमे हुए निगरान से पूछा, "क्या यहाँ किसी घोड़े को हाल में मारा गया है?"

"जी हुज़ूर," निगरान घबराते हुए बोला। "वह सुरमई घोड़ी जिस पर कल लॉर्ड गिसबर्न आए थे उसकी टांग टूट गई थी। उसे शान्त कर दिया गया था। उसकी खाल वहाँ आख़िर में बने भंडार में लटकी है।"

"लगे शर्त कि वह अब वहाँ नहीं है," रॉबिन ने कहा। छोटा जॉन तहकीकात करने गया। वह खाली हाथ लौटा। बाग़ी गुस्से से फूट पड़े। उन्हें समझ आ गया कि उन्हें छकाया गया था।

"डरो मत लड़कों," रॉबिन ने कहा। "भेड़िया इस बार बच गया है, पर उसका समय भी आएगा। आज रात का काम बेकार नहीं गया। दस नॉर्मन प्यादे अब ईमानदार किसानों को सता नहीं सकेंगे। पर सबसे बड़ी बात यह है कि हमने टुल को बचा लिया है।" रॉबिन ने टुल को इधर-उधर खोजा। पर टुल और कॉ कहीं नज़र न आए।

"बैट से भूत घोड़े की बात सुनते ही वे निकल गए थे," स्कार्लेट ने बताया। यह सुन बाग़ी हंसे और बैट खिसिया कर धरती पर पैर रगड़ने लगा।

"हमें भी निकलना चाहिए," रॉबिन ने आसमान को ताक कर कहा। "गिसबर्न के घुड़सवार सिपाही जल्द ही पहुँचने वाले होंगे।"

जब वे अपने शिविर की दिशा में जाने वाली पगडंडियों पर बढ़ रहे थे रॉबिन को उत्तर की दिशा में कूच करने की बाद याद आई।

"हमें बिना घोड़ों के ही उत्तर को निकल जाना होगा जॉन," उसने कहा। "अब सर रिचर्ड से घोड़ों को लेने का समय नहीं बचा। इधर ग्रीनवुड के शिविर का सामान बांधा जा चुका है।"

"कुछ देर के लिए ही सही, वह ख़याल बढ़िया था, जॉन बोला।

औचक हमला

गिसबर्न के सर गाय की जान बाल-बाल बची थी। जैसे ही सर गाय ने सहमे हुए बाग़ियों को पार किया, उसने घोड़े की खाल और अपना हल्का जिरह-बख्तर उतार फेंका, ताकि वह तेज़ी से आगे बढ़ सके। तब वह सीधे ही जंगल के मुख्य पथ पर इस उम्मीद से चल पड़ा था कि उसे वे सिपाही मिल जाएंगे जिन्हें उसने बुलवा भेजा था।



जैसे कॉ ने रॉबिन को बताया था नॉर्मनों को रात में जंगल पसन्द नहीं आता था। उन्हें घुप्प अंधेरा और पेड़ों की विचित्र आकृतियाँ नापसन्द थीं। अचानक सुनाई देने वाली अजीब-सी आवाज़ें भी उन्हें डराती थीं। जबकि जंगल में रहने वाले सैक्सन बन-बिलाव की उस आवाज़ तक को पहचानते थे जो वह शिकार करने के बाद निकालता था। वे शिकार करने वाले उल्लू की चिंचिंयाहट को, धर लिए गए हिरण की चीखों को बखूबी जानते थे। पर किसी नॉर्मन के लिए ये सब अनजान और डरावनी आवाज़ें थीं।

निर्दयी होने के बावजूद गिसबर्न अधिकतर नॉर्मनों से ज़्यादा बहादुर था। उसने जंगल की अनजान आवाज़ों पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह पतझड़ के चाँद का शुक्रगुज़ार था जो उसे तेज़ी से बढ़ने में मदद कर रहा था। उसे अपने पीछे आते लोगों को अहसास था, हालांकि वह उन्हें देख या सुन नहीं पा रहा था। उस बौने की नफ़रत से भरी आँखों की याद ने उसे सिहरा दिया, जिसे कैद किया गया था। गिसबर्न किले के तहखाने में कैद कर उससे बाग़ियों के ठिकानों के बारे में कितना कुछ उगलवाया जा सकता था, यह सोच उसने मन ही मन बद्दुआ दी।





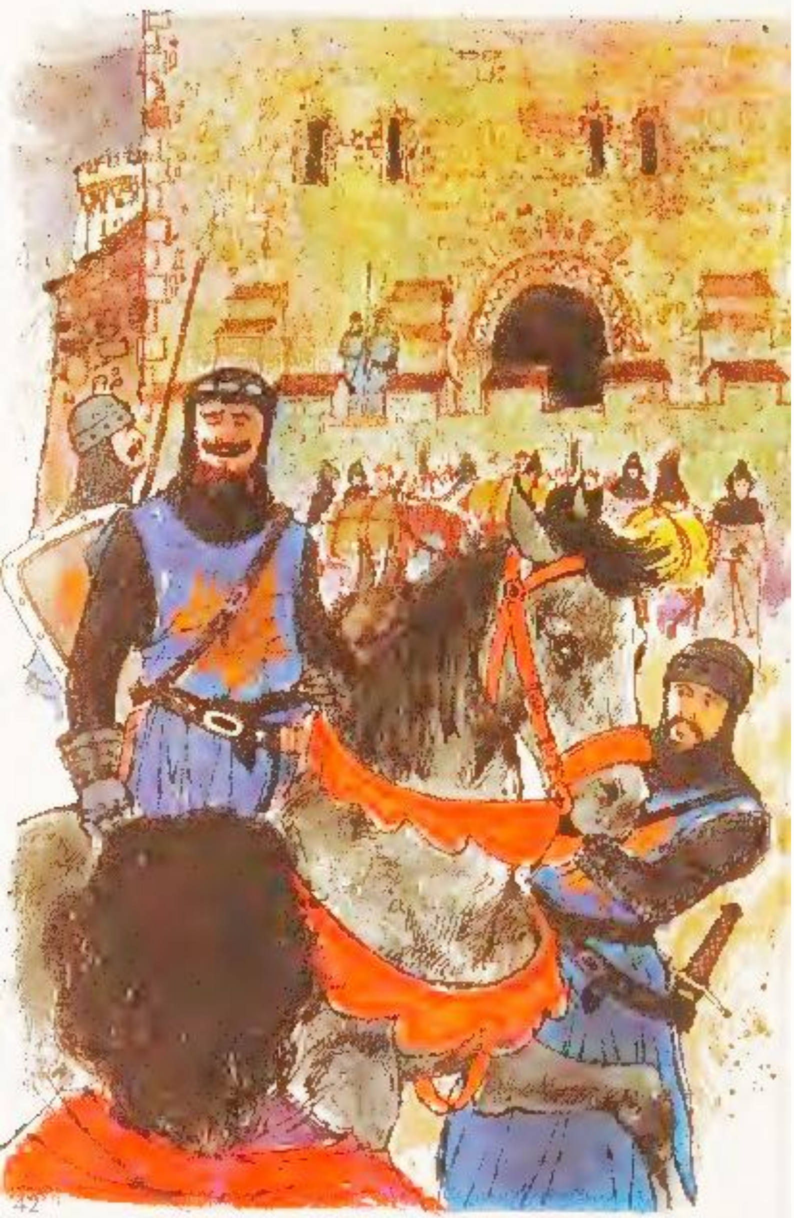
तब उसका ध्यान अपने जानी दुश्मन पर केन्द्रित हुआ। वह उसके प्रति नफ़रत से भर गया। उसे मालूम था कि रॉबिन हुड अपने जीते जी उसकी क्रूर और लालची महत्वाकांक्षा को पूरी नहीं होने देगा। रॉबिन हुड के मरे बिना और उसके बाग़ियों के गिरोह के टूटे बिना उसकी ज़िन्दगी भी महफ़ूज़ नहीं थी।

गिसबर्न को पहले यह अहसास तक नहीं हुआ कि वह खुद मौत के किस कदर क़रीब था। टिल और कॉ को घोड़े की खाल और वह जिरह-बख़्तर मिल गया था जिसे वह रास्ते में छोड़ आया था। वे शैतान भगोड़े की टोह लेते जंगल के मुख्य पथ तक पहुँच चुके थे। अब वे चुप्पी साधे उसका पीछा कर रहे थे, जैसे बिल्ली किसी चूहे का शिकार करती है।

जब तक टुल और कॉ उसके काफ़ी क़रीब न आ गए गिसबर्न ने उनकी आहट तक नहीं सुनी। अब उसके आक्रोश की जगह डर ने ले ली। हालांकि उसकी तलवार बच कर भागने में उसके आड़े आती, उसकी कमी सर गाय को महसूस होने लगी। उसने कमरबन्द से अपना छुरा निकालने की कोशिश की। वह जानता था कि वह आगे भाग नहीं सकता। सो वह एक पेड़ से टिका और लम्बी, गहरी साँसें लेने लगा। उसने मुड़कर पगडंडी को देखा और छुरा दाएं-बाएं घुमाता रहा, ताकि अचानक हुए हमले के लिए तैयार रहे। हल्की पदचाप के रुकने पर वह जड़ हो गया। चाँद की रोशनी में उसे दो आकृतियाँ खड़ी दिखी थीं। अब वे सरक कर दोनों ओर की झाड़ियों में गायब हो गईं। गिसबर्न को बाईं ओर से कुत्ते के भौंकने की आवाज़ सुनाई दी, मानो उसने अपना शिकार तलाश लिया हो। वह उसका सामना करने मुड़ा ही था कि दूसरी ओर से जवाबी आवाज़ आई। वह मुसीबत का सामना करने को तैयार था।

पर जिस हमले की उसे उम्मीद थी वह नहीं हुआ। इस बार बाईं ओर से लोमड़ी की आवाज़ ने उसे चेतावनी दी, तब दूसरी ओर से जवाबी आवाज़ आई। अब गिसबर्न को घोड़ों की टापें सुनाई दीं। नॉर्मन टुकड़ी उसके बचाव में आ पहुँची थी।

गिसबर्न जानता था कि उसका पीछा करने वाले अंधेरे में भाग निकलेंगे। रॉबिन हुड और उसके साथी भी आउटवुडस् छोड़ चुके होंगे। जब गिसबर्न और उसके सिपाही किले की दिशा में बढ़े आसमान में नाराज़गी की चमक थी। उसका दिमाग़ बाग़ियों को खोजने और उनका काम तमाम करने की कई योजनाएं बना रहा था।



भोर होते-होते घुड़सवार सिपाहियों की टुकड़ी किले के उठाए जाने वाल पुल पर बढ़ रही थी।

"शैतान के नाम पर यह भला क्या है?" गिसबर्न ने तमतमा कर पूछा। उसका निगरान मालिक के घोड़े की रास थामने दौड़ा आया। "क्या गिसबर्न किला एक सड़क छाप सराय बन चुका है? हो क्या रहा है, कमअक्ल?"

किले के अहाते में दो दर्जन लदे हुए माल ढ़ोने वाले घोड़े खुर पटकते धक्कमपेल कर रहे थे। काले चोंगे पहने कई पादरी उन सेवकों के काम की निगहबानी कर रहे थे, जो घोड़ों की पीठ से भारी सन्दूक व पेटियाँ उतारने में लगे थे।

"जी नहीं हुज़ूर," डरे हुए निगरान ने कहा। यह तो मठाधीश और पादरी हैं, जो पास ही एक नए मठ की स्थापना करने जाते हुए बीच में रुके हैं। यह सामान उनका ही है।"

"सत्यानाश हो उसका और उसके सारे सामान का!" सामन्त गुर्राया। गिसबर्न ने अपनी रास साईस की ओर उछाली और हुक्म दिया, "उस मूरख से कहो कि वह मेरे पास आए।"

"उनके पास आपको लिखा राजकुमार जॉन का ख़त है हुज़ूर," निगरान ने कहा।

"तो बात यह है, कसम से," गिसबर्न चिढ़ कर बोला। "ऊँची पहुँच वाला है मठाधीश। तो बेहतर होगा कि मिलने का हकुम देने के बदले अनुरोध करना। अब जाओ और मेरे लिए खाना और शराब भिजवाओ।"

अगले दिन जब मठाधीश का काफ़िला किले से निकला आधी सुबह गुज़र चुकी थी। दोपहर तक काफ़िला साझे चरागाहों और खेतों को पार कर जंगल की झाड़ियों के पास पहुँचा।

शाम होते-होते काफ़िला शैरवुड जंगल में काफी अन्दर तक आ चुका था।

विल स्कार्लेट ने बलूत के पेड़ की ऊपरी शाखा से काफ़िले को पहली बार देखा। वह वहाँ बैठा चैकसी कर रहा था।

"किस्मत हमारे साथ है जॉन," विल ने नीचे खड़े अपने साथी से कहा। उत्तर की ओर निकलने के पहले एक आख़िरी कोशिश की जा सकती है, अगर रॉबिन चाहे तो।"

अपने भारी-भरकम शरीर के बावजूद छोटा जॉन फुर्ती से पेड़ पर चढ़ विल के पास जा पहुँचा।

"उन भारी सन्दूकों को तो देखो," स्कार्लेट ने कहा। उसने उन सन्दूकों में भरे सोने की कल्पना की।

"सन्दूकों को छोड़ो, उन सुन्दर घोड़ों को तो देखो," छोटे जॉन ने कहा। उसने उत्तर के लम्बे सफ़र की बात सोची, जिस पर वे शाम को निकलने वाले थे।

पल भर दोनों बाग़ी लदे हुए घोड़ों और साथ चल रहे पादरियों को देखते रहे। तब फुर्ती से उतरे और रॉबिन को ख़बर देने दौड़े।

हालांकि गिसबर्न के सर गाय मठाधीश को चेतावनी दे चुके थे, फिर भी हरे कपड़े पहने उस लम्बी आकृति को देख मठाधीश सहम गया।

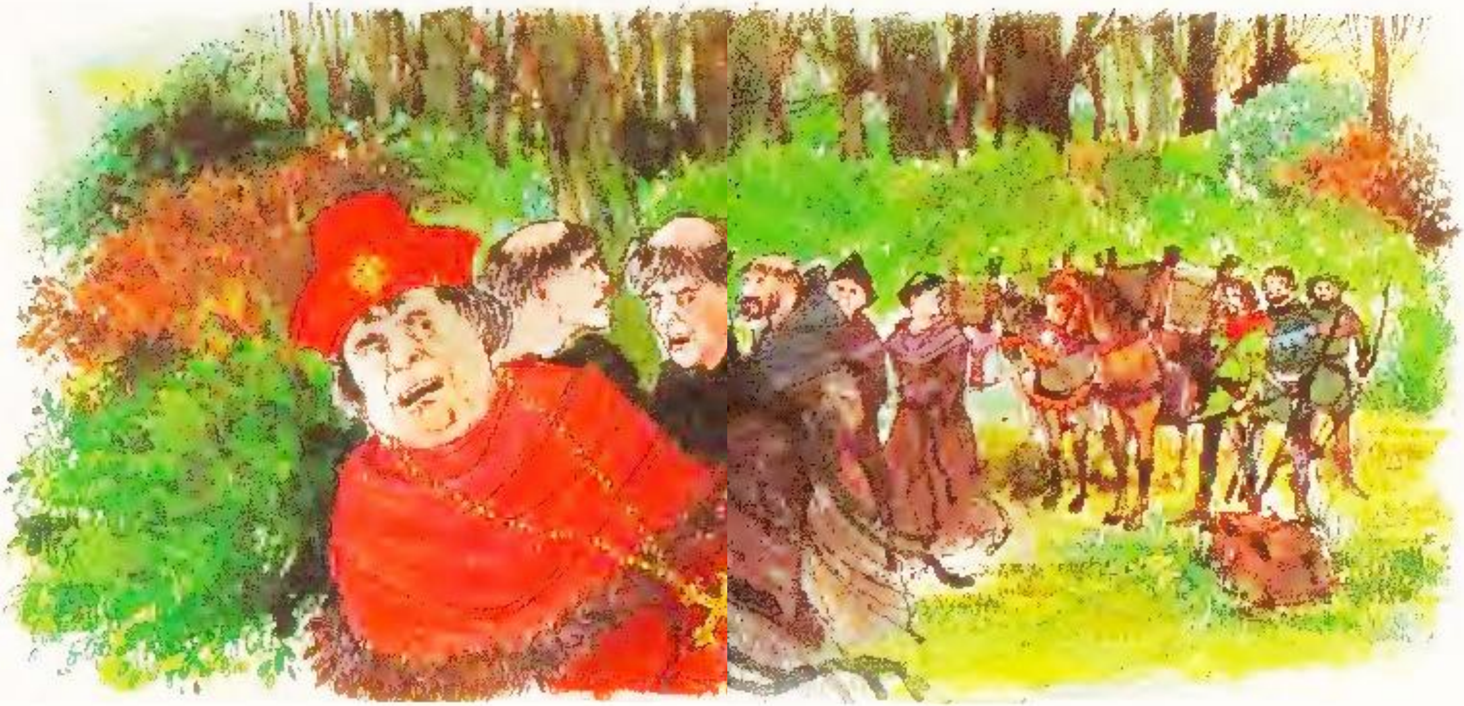
"ज़रा रुकें मठाधीश महोदय!" रॉबिन हुड ने कहा। "इस राह से जो भी जाता है, उसे पथ कर देना पड़ता है।"

डरे हुए होने के बावजूद मठाधीश को जो निर्देश दिया गया था उसके अनुसार उसे अपनी भूमिका ठीक से अदा करने की बात याद रही।



"कर? अरे पाजी यह कौनसा कर है? और तुम हो कौन?" मठाधीश ने धमकाते हुए पूछा।

"मैं रॉबिन हुड हूँ, जिसे लोग शैरवुड का राजा भी कहते हैं," रॉबिन ने जवाब दिया। "यह कर इस इलाके से सुरक्षित निकलने का कर है। जब तक राजा रिचर्ड घर लौट कर इसे महफ़ूज़ नहीं बना देते। डरे नहीं मठाधीश महोदय मैं जो कुछ आप ले जा रहे हैं, उसका आधा ही लूंगा। बाकी बचा हिस्सा मैं सड़क किनारे छोड़ जाऊंगा। पर मुझे आपके उम्दा घोड़े कुछ समय के लिए उधार लेने पडेंगे।"



गिसबर्न ने मठाधीश को बता दिया था कि बाग़ी यात्रियों का सारा सामन और पैसे नहीं लूटते। पर यह गिसबर्न की योजना के लिए सही नहीं था।

''सब कुछ ले लो दुष्ट, घोड़े भी,'' घबराए मठाधीश ने कहा। वह तो बस वहाँ से दफ़ा हो जाना चाहता था। उसने अपनी चोंगा संभाला और पगडंडी पर चल पड़ा। उसके साथी पादरी भी उसके पीछे हो लिए। रॉबिन ने अचरज से उन्हें देखा।

''यह तो अजीब-सा आचरण कर रहे हैं, जॉन,'' रॉबिन ने कहा। बाकी बाग़ी भी झाड़ियों से निकल अपने सरदार के गिर्द जमा हो गए। ''कोई गुस्सा नहीं फूटा, बस ज़रा धमकी भर दी। सज़ा की कोई बात नहीं की और अपना सारा सामान बिना हील-हुज्जत छोड़ गए!''

''अपने घोड़े भी,'' जॉन ने संतोष से कहा।

''और यह तब, जब मेरे सिवा उनके सामने कोई नहीं था? क्या सोचते हो टक? एलन? विल?''



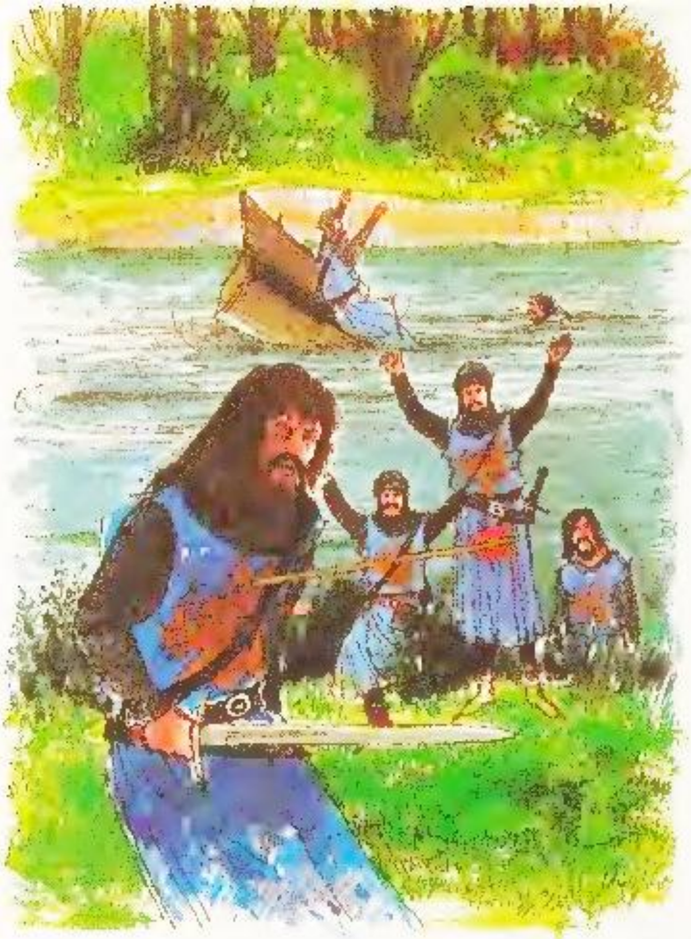
"मठाधीश तो अमूमन खीझे और झुंझलाए होते हैं," पादरी टक ने कहा। "पर यह तो ऐसा नहीं था।" वह पहले घोड़े के पास गया और कुछ सोचते हुए अपनी नाक सहलाई। "हो सकता है . . .।" उसने बोलना बन्द किया और घोड़े की पीठ पर लदे बड़े सन्दूक को ध्यान से देखा। तब वह फिर से मठाधीशों के तौर-तरीकों की बात करने लगा। उसने बोलते हुए इशारे से रॉबिन को पास बुलाया। रॉबिन ने भी उस सन्दूक को देखा, तब दूसरे सन्दूकों को भी। रॉबिन तब वहाँ चला गया जहाँ बाकी बाग़ी खड़े थे।

उसने फुसफुसा कर अपने साथियों को कुछ निर्देश दिए, और ज़ोर से बोला, "ठीक है दोस्तों। भले मठाधीश को अपना हिस्सा नहीं चाहिए। उसने मेहरबानी से अपने घोड़े भी हमें उधार दे दिए हैं। सो हरेक एक-एक घोड़े की लगाम पकड़ो और सारे खज़ाने को शिविर में ले चलो।"

काफ़िला आगे बढ़ा। हरेक घोड़े को एक बाग़ी ले जा रहा था, उसके दूसरे हाथ में छुरा था। उसके साथ एक और बाग़ी चल रहा था जो कमान पर तीर चढ़ाए था। आख़िरकार वे एक चौड़ी धारा के पास आए जो नदी से मिलने के पहले जंगल से गुज़रती थी। वे घोड़ों को उस जगह ले गए जहाँ धारा सबसे चौड़ी और गहरी थी।

घोड़ों के पुट्ठों पर एक धौल जमा उन्होंने घोड़ों को पानी में उतारा और जिन रस्सियों से सन्दूक घोड़ों की पीठ पर बंधे थे उन्हें काट डाला। जैसे ही घोड़े धारा में आगे बढ़े सन्दूक घोड़ों की पीठ से उछल कर गिरे और धीमे-धीमे बहती धरा में तिरने लगे।

सन्दूकों में किए गए उन छेदों से पानी अन्दर भरने लगा जिन्हे पादरी टक की पैनी आँखों ने तलाश लिया था। कुछ सन्दूक पलटे और डूब गए। दूसरों से डर और गुस्से से निकली चीखें आने लगीं। उनके ढक्कन खुले और नॉर्मन सैनिक उनसे बाहर निकले।



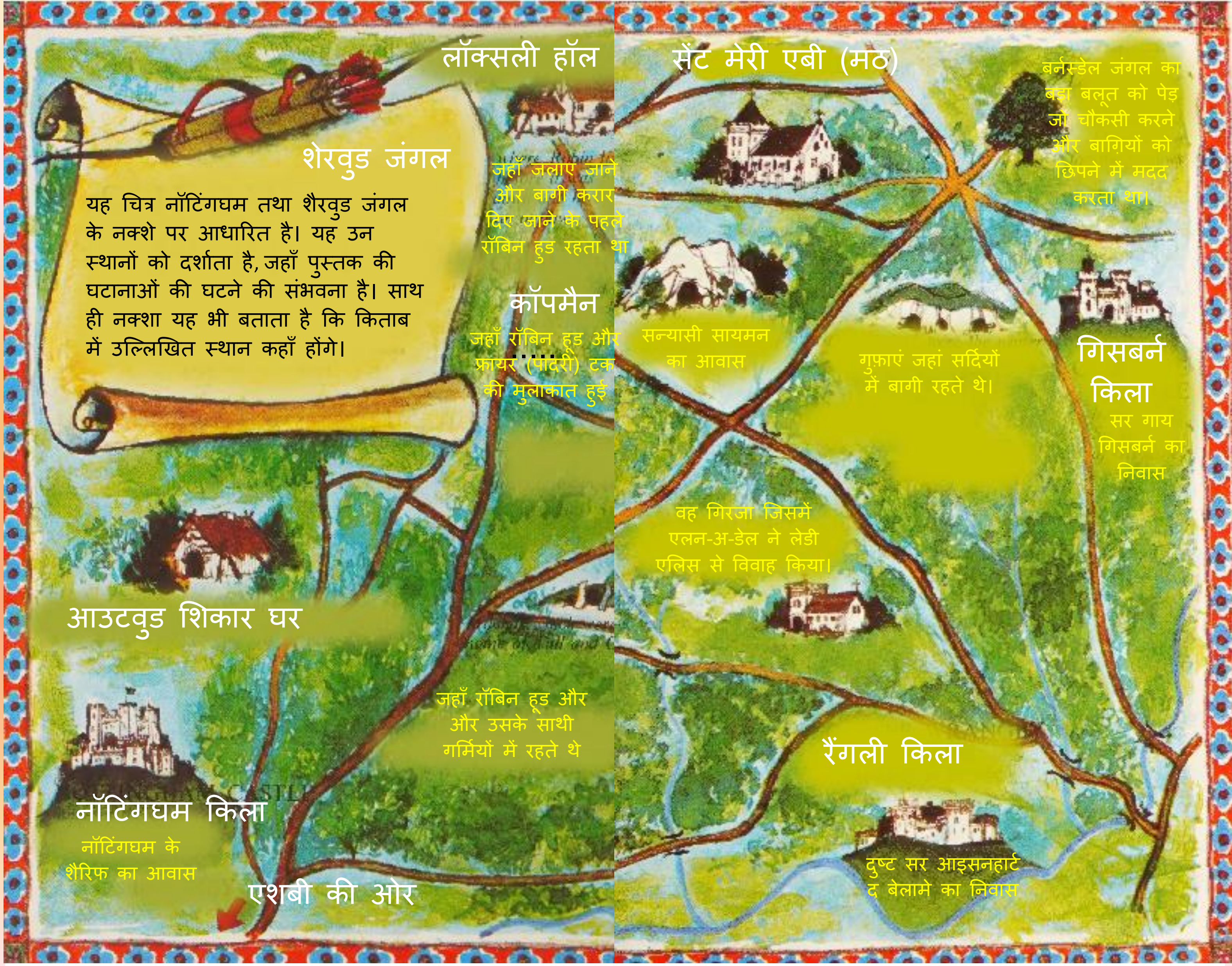
ज़्यादातर ने तो सन्दूक डूबने के बाद खुद को धारा में बहते पाया। कुछ हार मान हाथ उठा किनारे आने में कामयाब रहे। केवल एक ही अपनी तलवार उठाए दाँत किटकिटाता रॉबिन की ओर बढ़ा। बिल स्टटली के तीर ने उसे वहीं ढ़ेर कर दिया।

"अपने मालिक के पास लौटो," रॉबिन ने बचे सिपाहियों से सख़्ती से कहा। "उससे कहना रॉबिन हुड के हाथ लम्बे हैं, और सैक्सन बदला ज़रूर लेंगे। उससे कहना कि उसके पास गिनती के दिन बचे हैं। उसके कुकर्मों के कारण उसकी जान जाएगी। अब दफ़ा हो जाओ।"

भयभीत सिपाही गिरते-पड़ते भागे। उन्हें ज़िन्दा होने की खुशी थी पर लौटने पर अपने मालिक के आक्रोश का डर भी था। इधर छोटे जॉन ने घोड़ों को अन्य बाग़ियों की मदद से इकट्ठा किया और उन्हें शिविर की ओर ले चला।

छिप कर देख रही दो आकृतियों ने बाज़ की जीतने की पैनी आवाज़ की। रॉबिन ने घने सदाबहार पेड़ों की उस ओर मुड़ कर अपना हाथ हिलाया, जहाँ से आवाज़ आई थी।




लॉक्सली हॉल
सेंट मेरी एबी (मठ)
बर्नस्डेल जंगल का बड़ा बलूत को पेड़ जो चौकसी करने और बाग़ियों को छिपने में मदद करता था।
शेरवुड जंगल
यह चित्र नॉटिंगघम तथा शैरवुड जंगल के नक्शे पर आधारित है। यह उन स्थानों को दर्शाता है, जहाँ पुस्तक की घटानाओं की घटने की संभवना है। साथ ही नक्शा यह भी बताता है कि किताब में उल्लिखित स्थान कहाँ होंगे।
जहाँ जलाए जाने और बागी करार दिए जाने के पहले रॉबिन हुड रहता था
कॉपमैन
जहाँ रॉबिन हूड और फ्रायर (पादरी) टक की मुलाकात हुई
सन्यासी सायमन का आवास
गुफ़ाएं जहां सर्दियों में बागी रहते थे।
गिसबर्न किला
सर गाय गिसबर्न का निवास
वह गिरजा जिसमें एलन-अ-डेल ने लेडी एलिस से विवाह किया।
आउटवुड शिकार घर
जहाँ रॉबिन हूड और और उसके साथी गर्मियों में रहते थे
रैंगली किला
नॉटिंगघम किला
नॉटिंगघम के शैरिफ का आवास
एशबी की ओर
दुष्ट सर आइसनहार्ट द बेलामे का निवास